कहानी

नौकरी चाहे घर

डॉ० पी० एस० सिन्हा

एक दिन के बात ह कि हम अपना लंगोटिया इयार नागेन्द्र के इयार सोहन के आफिस में बहठल रहीं। ओही घरी उनकर दायी आके छुट्टी खातिर निहोरा करे लागल। पूछला पर बतवलस कि हमार बेटी बेमार बिया, ओकरा के अस्पताल ले जाये के बा। 'मालिक हमरा के जल्दी छुटटी दे दीं- ओकरा बेमारी हो गइल बा' के रट लगवले ओइसे रहे जइसे पुरनका जमाना में माइक्रोफोन के तावा घिसला पर एके लाइन बार-बार सुनावत रहे। बाकिर तुलसी दास जी के ऊ लाइन हमरा दिमाग में धुमे लागल कि-

"आरत के चित रहे ना चेतु।
बार-बार कहे आपन हेतु॥"

भला कइसे उ निहोरा ना करे- पइसा-रूपया के जोगार करते-करते देर हो गइल रहे, ओकर मरद के अस्पताल ले जाये में, जवना से ओकर मरद बेदरद होके बीचे राह में ही ओकरा के छोर के आपन देह छोर के दोसरा लोक में चल गइल रहे। अस्पताल के बदला बैलगाड़ी के राह में से ही घुमा के घरे ले जाके उनका लाश के श्मशान ले जाये के पड़ल रहे।

सोहन खिशिया के कहलस एगो कवनो चून ले नौकरी चाहे घर? घरे जाके बेटी के जहाँ-जहाँ देखावे के होखे देखाव। सोहन से हम अँग्रेजी में कहनी "इन्टर्पशन प्लीज सर", त उ हमरा के जबाब देहलस "नो इन्टर्पशन प्लीज सर"। हम अंग्रेजी एह से बोलनी की दायी इ मत बूझो कि हम का बतिआवत बानी आ ओकर काम भी हो जाव। संवेदनशील भइला पर बड़ा दुःख होला। केहू, केहू के मारी, गाली दी आ रउआ संवेदनशील बानी त दुःख रउओ होइ। सहे के पड़ी, कभी-कभी झगड़ो-तकरार भी करे के पड़ी। बाकिर का करेब रउआ? केकरा-केकरा से झगड़ा करब? अफसोस त इ बा कि जबले केहू संवेदनशील ना होई लेखक त नाहिए बन सकी। हमरा त ना बुझाला कि अइसन बेदरद लोग के छाती में भगवान मांस के दिल के बदला में पत्थर के दिल काहे के बनवनीं?

हमरा खूब कहला पर सोहन दायी के छुट्टी देहलस बाकिर फेरू देर हो गइल रहे। दायी के घरे पहुँचत-पहुँचत ओकर बेटी घर छोर के स्वर्ग चल गइल रहे, अपना माई के चाल करत-करत। जइसन की अगल-बगल के लोग बतवलस कि तोरा के बाड़ा इयाद करत रहलसहिअ। अतना सुनत भइल कि दायी अपना छाती में मुक्का मार-मार के रोये-चिल्लाये लागल, कभी-कभी उ बेहोस हो जात रहे, ओकर जबरा बइठ जात रहे, दांत लाग जात रहे। लोग के लाख समझवला-बुझावला पर भी ओकर मन माने के नाम ना लेत रहे। ऊ अतना जरूर कहत रहे कि-"सोहना के कारण इ सब भइल ह, ऊ हमरा के समय पर छुट्टी देले रहित त हमार बेटी के जान ना नू जाइत, हम ओकरा के डॉक्टर बाबू से देखा के दवाई देतीं त ऊ जरूर ठीक हो जाइत। अइसन कतना रोगियन के हम उनका से देखा के ठीक करवा देले बानी, पइसो

के कवनों बात ना रहेला, आगे-पीछे दियात रहेला, बाकिर समय पर ना गइला पर उहाँ के खूब खिशिआइले-रिशिआइले।

सोहन से इ हमार चउथा भेंट रहे। पहिलका भेंट में उ भगवान से कम सैद्धान्तिक ना लागत रहे, दुसरका-तीसरका में कम होत-होत एह भेंट में त ऊ शैतान लोगन के भी पीछे छोड़ देले रहे।

दुनिया में समय बड़ा बलवान होला। हरि ओम शरण जी के भजन त रउओ सुनलहीं होखब-"***समय का खेल निराला रे भाई***-" त भला सोहन कइसे बलवान रह सकत रहे। रावण के ना चलल, आ ना चलल कंस के, त भला कइसे चलत रही सोहन के?

तीन-चार बरिस बाद हम आपन फटफटिया खराब भइला के कारण रेक्सा से जात रहीं। राह में एगो रेलवे गुमटी रहे, ओकरा चढ़ाई पर रेक्सा वाला के पसेना चले लागल, हम कूद गइनी ओकरा रेक्सा पर से। त रेक्सा वाला कहलस मालिक हम त चढ़ाइये लेतीं, काहे के उतरल गइल ह? मालिक हम रेक्सा खींचत बूढ़ हो गइनी बाकिर अतना लम्बा समय में रउआ दूसरका आदमी बानी जे हमार गंजन देख के रेक्सा से उतर गइनी हँ। कबहीं-कबहीं त सामान ढ़ेर भइलो पर भी, कहलो पर भी लोग ना उतरेला। मजबूरी में हमरा रेक्सा के पाछा से धक्का लगावे के पड़ल, काहे की हम देखली-रेक्सा वाला तब भी दिक्कत में रहे काहे कि हमार दूगो भारी झोरा रहे। जब हमनी ढ़लान पर भइनी त रेक्सा वाला के कहला पर हम रेक्सा पर बइठ गइनीं। ओतने में एगो जानल-सुनल-कड़कस आवाज में केहु रेलवे-लाइन के बगल से दउड़त आ चिल्लात-"ए डॉक्टर साहब-ए डॉक्टर साहब" हमरा ओरी आवत रहे। हम फट से रेक्सा वाला के पीठ पर हाथ ध के कहनी- तनी रोक हो--बुझाता कि केहू हमरे के चाल करता, आवाजो जानल-सुनल बुझाता, बाकिर पता ना के ह? चेहरा नइखे चिन्हात। तनिये देरी में ऊ आदमी चिन्हा गइल- अरे इ त सोहन बाबू हउअन। हमरा चिहाये के पड़ल उनकर हाल आ भेष-भूशा देख के। हमरा कुछ पूछे के पहिलहीं उहाँ के कहे लगनी- हम त कब से मिले के चाहत रहनीं ह, हमरा के माफ कर दी डॉक्टर साहब, हमार सब कुछ लूट गइल, हमार धन-सम्पत्ति के त बाते छोड़ीं, हमार घमंडो, लुटा गइल, भगवान हमरा से सब कुछ छीन लेनी। अब हम निपट-गँवार अइसन घुमेनी, लोग पता ना काहे हमके पागल कहेला, लड़िका सब हमके ललकारेले सन, कुछ त हमरा के ढ़ेलवसबों करेले सन। हमरा बुझात नइखे कि इ सब हमरा साथे का होता? भगवान का चाहत बानी? ना खाये के ठेकाना-ना सुते के-ना कपड़ा पहिने के? हम का करीं? हमरा तनिको नइखे बुझात, हमके राह देखायीं रउआ- ए डॉक्टर साहब।

हम भक होके सोहन बाबू के चेहरा देखत रह गइनी। सोहन बाबू दसो नोह जोड़ के निहोरा करे लगलें। डॉक्टर साहब, हमरा माफ कर दीं, माफ कर दी हमरा। का अबहियों माफ ना करब? हमरा बुझाते ना रहे कि का हो गइल बा इनका?

हमरा पुछे के पड़ल-का कहत बानी सोहन बाबू? अतने में रेक्सा वाला हमरा से कहूँचे लागल, उ चाहत रहे कि हम सोहन से मत बतियाईं। बाकिर हमार मन मानत ना रहे। हम रिक्सा वाला से कहनी- जा हो तनी तूँ चाय पी

ल हो- दोकान पर, आ दूगो चाय हमनियों के भेज द, ल इ दस रूपया के नोट, चाय के रू0 ओकरा दे दिह।

सोहन कहे लगलें-एक दिन के बात ह, हमरा मेहरारू के बोखार लागल रहे, आ हम जवना कंपनी में जी0 एम0 रहीं, ओकरा मालिक पर ई0पी0एफ0 कमिश्नर साहेब केश क देले रहीं, ओही विषय में एगो लमहर वकील के हाई कोट से बोलावल गइल रहे। हम अपना मेहरारू के हॉस्पिटल ले जाके देखावे के चाहत रहीं- कंपनी के गाड़ी से। मालिक अपना के बचावे खातिर परेशान रहलन काहे कि उनका पर वारन्ट भी आ गइल रहे। हम छुट्टी खातिर गिड़गिड़ात रहीं आ मालिक पुलिस के डर से बचे खातिर ओइसे जगह खोजत रहलन जइसे कवनो बिलाई से बचे खातिर चूहा। उनका कंपनी में लगभग पचहत्तर लोग काम करत रहे आ ई0पी0एफ0 के हिस्सा चार आदमी के जमा होत रहे। लेवर इन्सपेक्टर आ ई0पी0एफ0 कमिश्नर साहब के ऑफिस के एगो किरानी बाबू मिल के लाखों-रूपया शेयर के वर्षों से बचावत रहे लोग, एकरा बदला में ए दुनो आदमी के तनख्वाह (पगार) अइसन रूपया दियात रहे।

मरजी भगवान के, पुलिस विभाग के लोग वारंट लेके अतने में आ गइल। मालिक हमरा के इशारा कइनी- ए लोगन के खुश कर द। हम ऑफिस में गइनी आ एक सौ रू. के एगो गड्डी दे के एक माह के मोहलत ले लेनी। जात-जात इन्सपेक्टर कहलस कि नौकरी हमरो बा, हम एक महिना एने ना आयेम, बाकिर ओकरा बाद इ सब ना चली, काहे कि एस0पी0 साहब के बड़ा दबाव बा। इहां के त पहिलका पोस्टिंग ह एसे उनकर नाक-नक्सा तनी अधिक चढल़ बा। हमनी के त गालिए से बात करेले। हम उनकर गाली ना सुन सकेम। खैर! कबले? कवनो नेता से भेंट हो जाई त इनकर सब एस0पी0 गिरी भुला जाई। इ कहत पुलिस इन्सपेक्टर आपन गाड़ी बढ़वलस।

हम घरे जाये के निहोरा करते रही, अपना मेहरारू के बेमारी बता-बता के हम हार चुकल रहीं तबले मालिक कहलन-"***चिड़ई के जान जाये आ लड़िकन के खेलवना***"। तहरा तनिको नइखे बुझात कि तूँ का कहत बार एह घड़ी। जानत बाड़, तूँ ना रहत त हमरा के इ पुलिस वाला आज भीतर कर देते सन। इ अलग बात बा कि हमरा बहनोई के बहनोई के भगीना एह घड़ी डी0आइ0जी0- एह संभाग के बारन। उनका से कह के एह लोगन के हम सस्पेन्ड करा देतीं- लाइन हाजिर करा देतीं, बाकिर इ साला जइसन गारी देले सन, डंडा मारेले सन ओकरा हम कइसे लवटवतीं।

तलेक फेरू हम निहोरा कइनी छुटटी के त उ कहलन तोरा नौकरी करे के बा त कर, ना त जो घरे-अपना मेहरारू लगे। हम जानत बानी नू-"***हगे के बहाने तँ चिचोड़ कोड़े के चाहत बार***"। निमन-बाउड़ कुछ-कहलन, गारियो देहलन, आ हम रोअत घरे अइनी त लोग हमरे बाट जोहत रहे। हमरो घरे आवे में देर हो गइल रहे, आ हमार मेहरारू हमरा के चाल करत-करत दोसरा दुनिया में चल गइल रही।

हम अपना के ना रोक सकलीं, हमार उहे गति हो गइल जवन हमरा दायी के भइल रहे। बाकिर उ त ठीक बिया आ हमरा के लोग पागल कहेला। अतने में रेक्सावाला आ गइल। रिशिआइल आ तमतमाइल चेहरा-कइलस मालिक चाय ठंढ़ा हो गइल नू राउर? हम चाय पी के आ गइनीं जवन लड़िका चाय ले के आइल ह ऊ कहत रहलसा कि का जाने का-का उ

सोहना पगलवा से बतिआवत बाड़न? हम चाय ध के चल अइनी ह।

रेक्सा वाला फेरू कहलस चलीं ना चलीं? हमरो त पेट बा? आ घर में एगो मुस्मात बहिनो बिया। हम मजबूरी में रेक्सा पर बइठे के चहनी त सोहन हमार हाथ ध ले ले। अब हम कबो ना कहब "नो एक्सक्यूज मी प्लीज सर"। अब त माफ कर द। अतने में रेक्सावाला गुस्साइल हमरा पर-का तूँ हमरा के खरीद ले ले बार? हमरा बहिन के सेंदूर इहे पगला छिन लेलस, एगो बेटी रहे-ओकरा छिन लेलस।

छुटिटयो ना देत रहे आ जब एकर मालिक छुट्टी ना देहलस-एकर मेहरारू मर गइल-त इ पागल हो गइल। बाल-बच्चा त रहले ना रहे?

"आगे नाथ, ना पीछे पगहा।
बीच बाजार में नाचे गदहा।।"

हम ना रहतीं त हमार बहिन कहाँ जाइत? हम ओकरा ले अइनी अपना घरे। अब ऊ हमरा घरे रहेले, अपना भउजी-भतीजा आ भतीजियन के साथे। अब हम ओकरा के दायी के काम ना करे दीं। हम रेक्सा चला के कमाइले, घर भर के लोग के पेट भरेनीं। ओकरा खातीर हम चार गो बकरियो बेसाह देले बानी।

इ सुनके हमरा से ना रहल गइल। हम कहनी अब हम रेलवे स्टेशन ना जायेब, तूँ हमरा के अपना दायी से मिलवाव। रेक्सावाला नकारत रहे, बाकिर हमार निहोरा पर तनी-तनी ध्यान देत रहे। अतने में ओकर बहिना बकरी ले के आवत रहे। उ चिन्हे गइल हमरो के, अपना पुरनका मालिक सोहन के। ऊ रोये लागल-मालिक इ भेष राउर-कइसे? काहे?- सब सुनला पर ऊ कहलस- आरे मालिक हम त गरीब रहीं आ रउआ- अतने कहत भइल कि ऊ कहे लगलें आरे दायी तूँ हमरा चिन्हत बारू का? दायी कहे लगली- मालिक हम रउरा रोटी से अपना परिवार के पेट भरले बानी, रउरा घरे बहुत दिन झाड़ू-पोंछा लगवले बानी, भला कइसे ना चिन्हब। हमार यादगार अभी ठीक बा, हम पागल थोड़े हईं?

सोहन कहे लगलें-हमार हाल तहरो से बेहाल बा दायी, हमरा माफ कर द। तोहरा के लोग पागल त ना नू कहेला? हमरा त लोग पागल भी कहेला आ ढेलवसबो करेला, का ले कहीं------।

दायी निहोरा करे लागल, मालिक हमरा घरे चली, तनी कुछ खा लीं, नहा धोआलीं। बाकिर ओकर भाई-रेक्सावाला के खीस के मत पूछीं। बाकिर अन्त में बहिन के निहोरा के आगे उहो झूक गइल। हम, सोहन, रेक्सावाला आगे-आगे आ दायी अपना खोइंछा में के शाग ले ले पीछे-पीछे हमनी दायी के घरे पहुँचलीं। जबले दायी अपना खोंइछा के सरसों, खेशारी, बथुआ, गुमा आ चना के टूँग-टूँग के बनवली आ मकई के रोटी, तबले हमनी इनार पर से नहा-धोआ के आ गइनी। दायी पीढ़ा पर हमनी के बइठा के बड़ा प्रेम से खिअवली आ विजयी महसूस करत रही सोहन बाबू के छुधा त अघा गइल बाकिर पिछला करनी उनका दिमाग में नाचत रहे। चले के बेड़ा सोहन बाबू माफी माँगे लगलन त दायी कहली-ई का करत बानी मालिक? हमरा त अपने लोगन के आशीर्वाद चाहीं अपने लोगिन राम-लखन हईं आ हम सेवरी--------।

डॉ॰ पी॰एस॰ सिन्हा।
सम्पर्क - 290/N2/AR
डी. सेक्टर बरखेरा मेल
भोपाल पीन-462021